प्लूटो

वर्ष 9 अंक 4

अक्टूबर-नवम्बर 2024

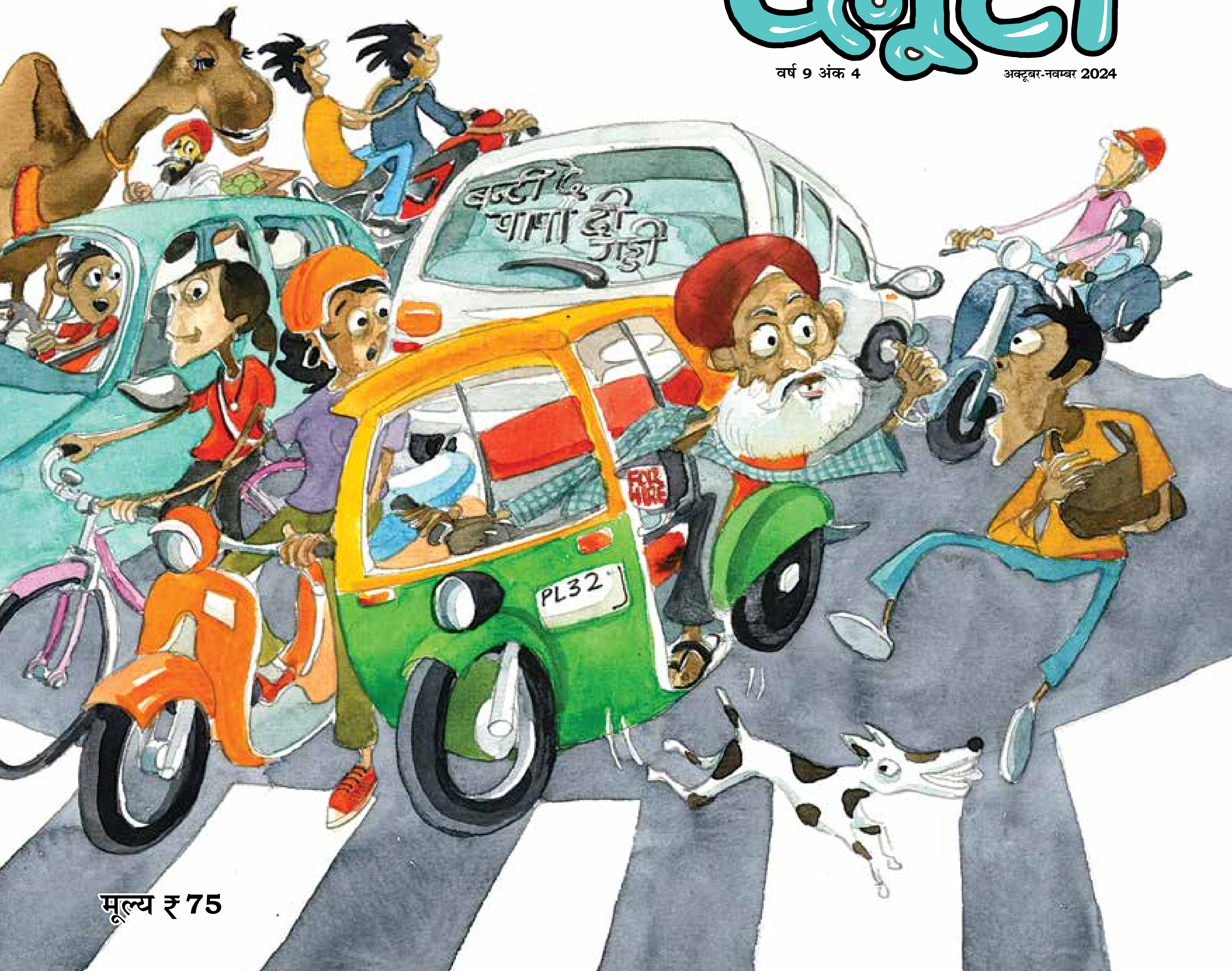

मूल्य ₹ 75

चुहिया चम्पत हो ली

बी. एन. गोस्वामी | चित्र: तविशा सिंह

इक्कड़ दुक्कड़ चुहिया
चढ़ी घड़ी पर चुहिया
टन! घड़ी जब बोली
चुहिया चम्पत हो ली!

आकल्पन: सुशील शुक्ल
चित्र: तापोशी घोषाल

चित्रकथा: पंकज सैकिया

ओ भाईती, किधर गया?
बा मैं यहाँ।
यहाँ कहाँ?

अच्छा इधर आजा।
इधर किधर?
यहाँ
कहाँ?
अच्छा जल्दी कर वरना चाय ठंडी हो जायेगी। इस साइड आजा।
इस साइड मतलब किस साइड?
थोड़ा सा इधर। थोड़ा सा लेफ्ट। थोड़ा सा राइट।

अच्छा तुम्हारा वाला लेफ्ट कि मेरा वाला राइट?
भाऊ भाऊ
পকা ধানৰ মাজে মাজে সৰু সৰু আলি অ...
अरे धुन सुन और उसकी तरफ चल।
और जल्दी चल वरना चाय ठंडी हो जायेगी।

पके हुए धानों में
छोटी छोटी गलियाँ
भक्क भक्क आलि अ' भक्क भक्क आलि...

गलियों में गाए

खंजन गाए ही जाए

अच्छा खुशी चाय ठंडी तो नहीं हुई ?

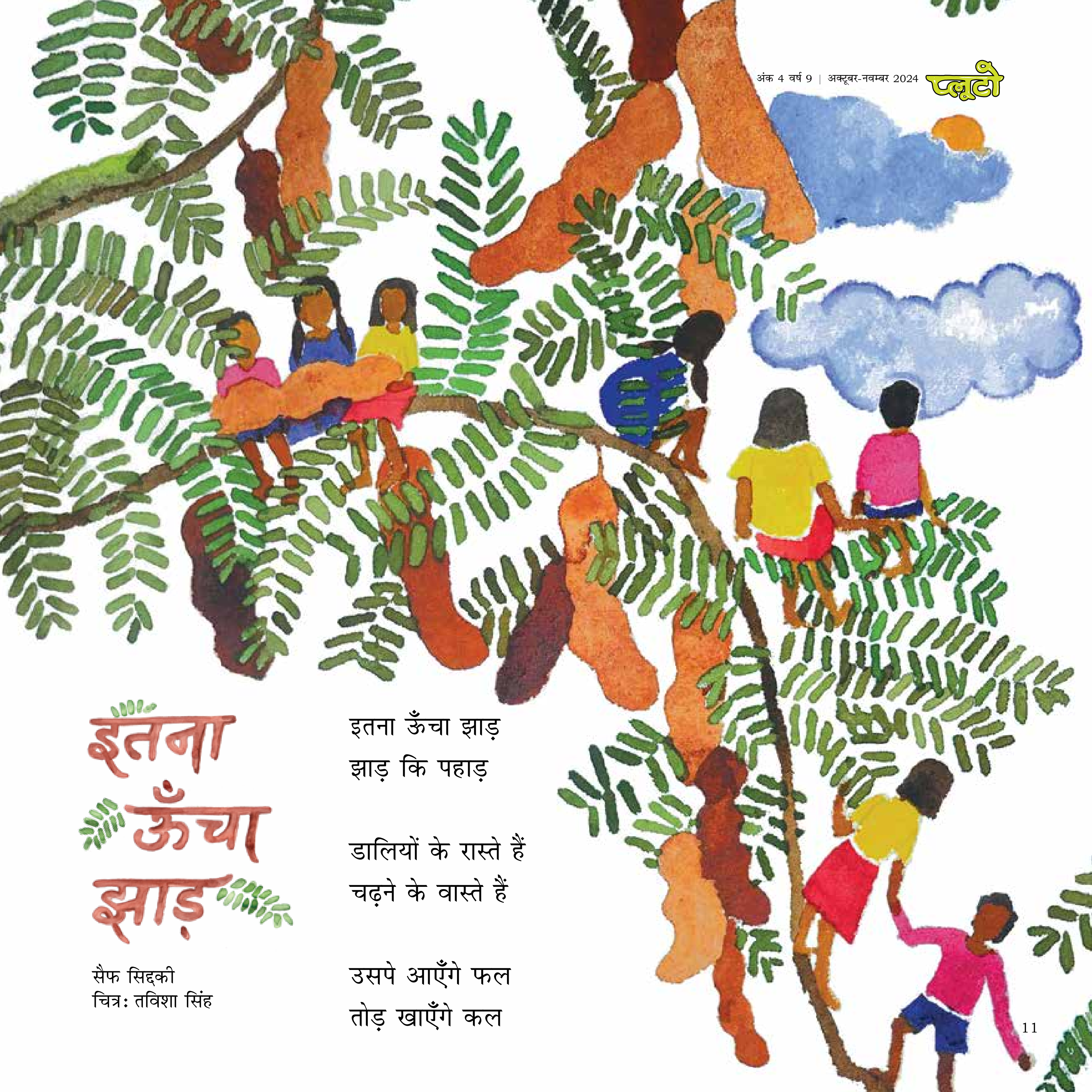

इतना ऊँचा झाड़

सैफ सिद्दकी
चित्र: तविशा सिंह

इतना ऊँचा झाड़
झाड़ कि पहाड़

डालियों के रास्ते हैं
चढ़ने के वास्ते हैं

उसपे आएँगे फल
तोड़ खाएँगे कल

कौआ

राधिका महावर, पाँचवीं, अल्लापुर
चित्र: नीलेश गेहलोत

कौआ अकसर आता है
मांस का टुकड़ा लाता है
पेड़ पे बैठे खाता है
फिर उसको जो गाने आते
गिन गिन करके गाता है

धूल भरी थी गैल

पिकेश गुर्जर, आठवीं,
ग्रामीण विकास केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

धूल भरी थी गैल
जिसमें चल रहा था बैल
बैल के गर्दन में घण्टी
घण्टी से लिपट गया बन्टी

लायंस PAV

चीता फास्ट फूड

चूहा

सम्यक गिरी, आठवीं, हरियाणा
चित्र: मानसी कश्यप

चूहे ने मेरी किताब को काटा
रख देता सामान जो लाता
वह चूहा था या उसकी माता

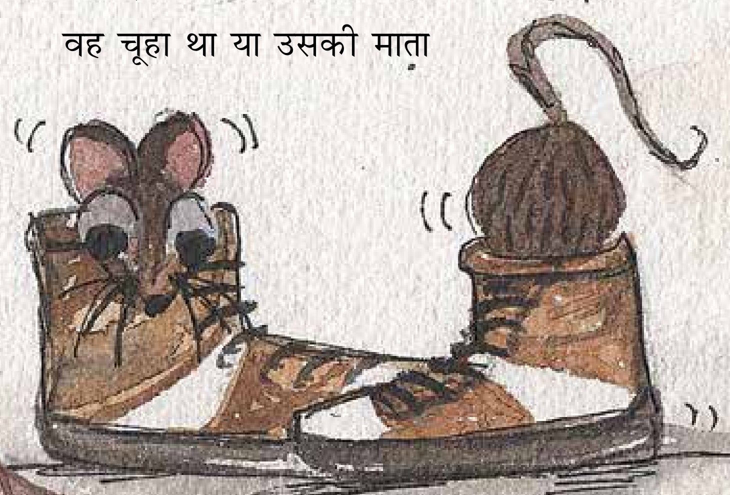

मेरे किचन का सामान खाता
मुझको चूहा बड़ा सताता
सताना मुझको उसे है भाता
वो रोज़-रोज़ मेरे घर आता
और ये सब काम कर जाता

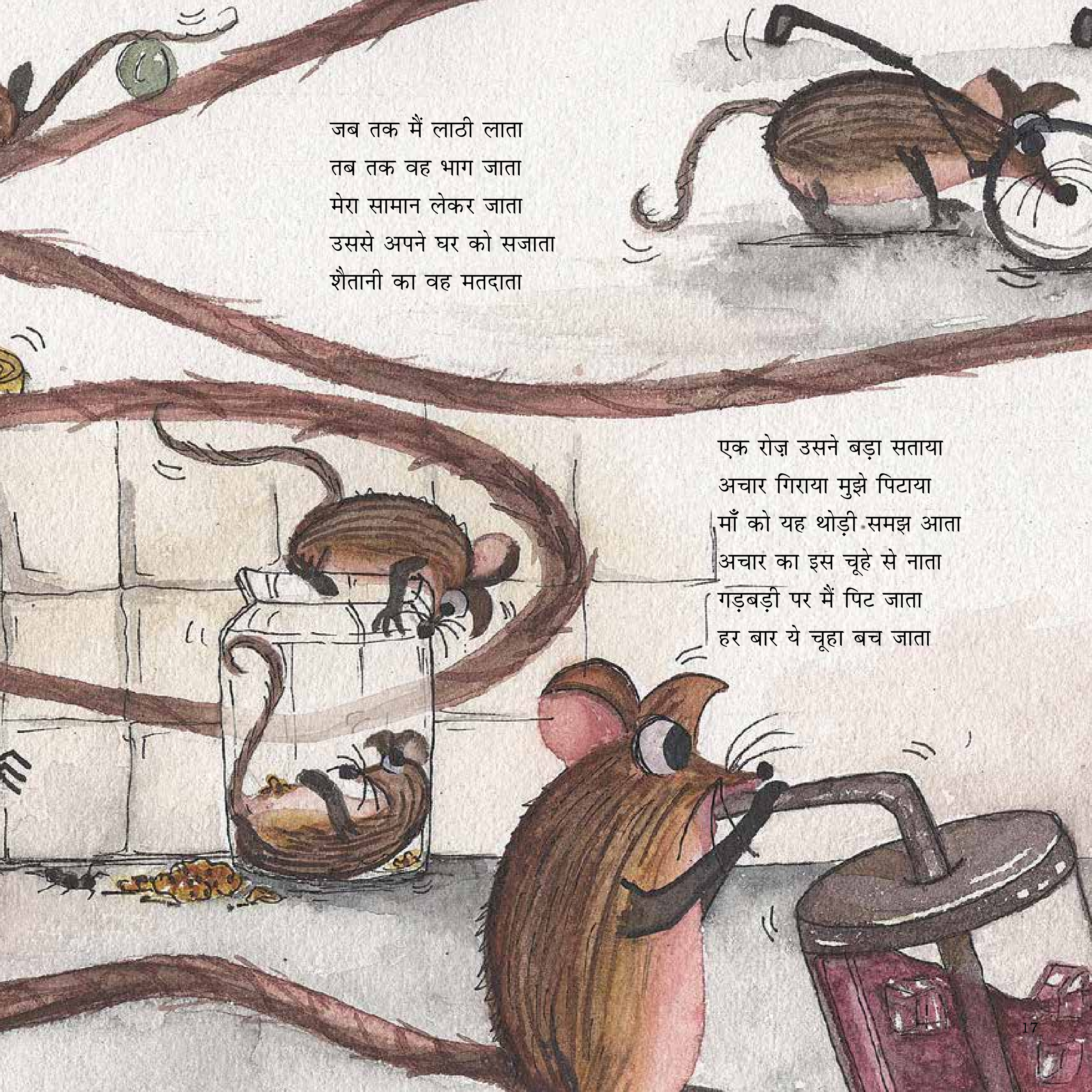

जब तक मैं लाठी लाता
तब तक वह भाग जाता
मेरा सामान लेकर जाता
उससे अपने घर को सजाता
शैतानी का वह मतदाता

एक रोज़ उसने बड़ा सताया
अचार गिराया मुझे पिटाया
माँ को यह थोड़ी समझ आता
अचार का इस चूहे से नाता
गड़बड़ी पर मैं पिट जाता
हर बार ये चूहा बच जाता

ঘুম
আলো
বাজার
কথা
সকালে
মাটি
ঠাকুমা
চাঁদ
ঠাকুমা
পরীক্ষা

शब्दज्ञानी जी को एक चिट्ठी

अद्विता पुंडीर, पाँचवीं, डीपीएस पुणे
चित्र: हबीब अली

शब्दकोश जी, आपको मेरी नमस्ते।

मैं आपको एक नया नाम देना चाहती हूँ। क्या मैं आपको शब्दज्ञानी बुला सकती हूँ? शब्दज्ञानी जी, आपके अन्दर इतने सारे शब्द रहते हैं। आपको भारी नहीं लगता?

मैं सोच रही थी क्यूँ न आप अपने अन्दर से परीक्षा शब्द हटा दें। इससे हम बच्चों को परीक्षा न देना पड़े और हम सब दिन सिर्फ खेलें और आराम से पढ़ाई करें। ऐसा नहीं है कि मुझे परीक्षा बिलकुल पसन्द नहीं। बस मुझे यह बात नहीं पसन्द कि परीक्षा में अंक मिलने के कारण हम दोस्त अलग हो जाते हैं।

शुक्रिया शब्दज्ञानी जी, आपसे बात करने में बहुत मज़ा आया।

टर टर वॉटर

हिमाँशु व्यास
चित्र: भार्गव कुलकर्णी

जंगल से लौटा तो मैडम ने पूछा -
क्या देखा?
मुन्दु बोला -
मेंढक का बच्चा
करता था वो टर टर

नहीं, नहीं मुन्दु, सही कहो
वॉटर में वो रहता है
वॉटर में वो बहता है
वो कहता होगा वॉटर वॉटर

नो मैडम, करता है वो टर टर
नो मुन्दु, वॉटर वॉटर
वॉटर वॉटर, टर टर, टर टर

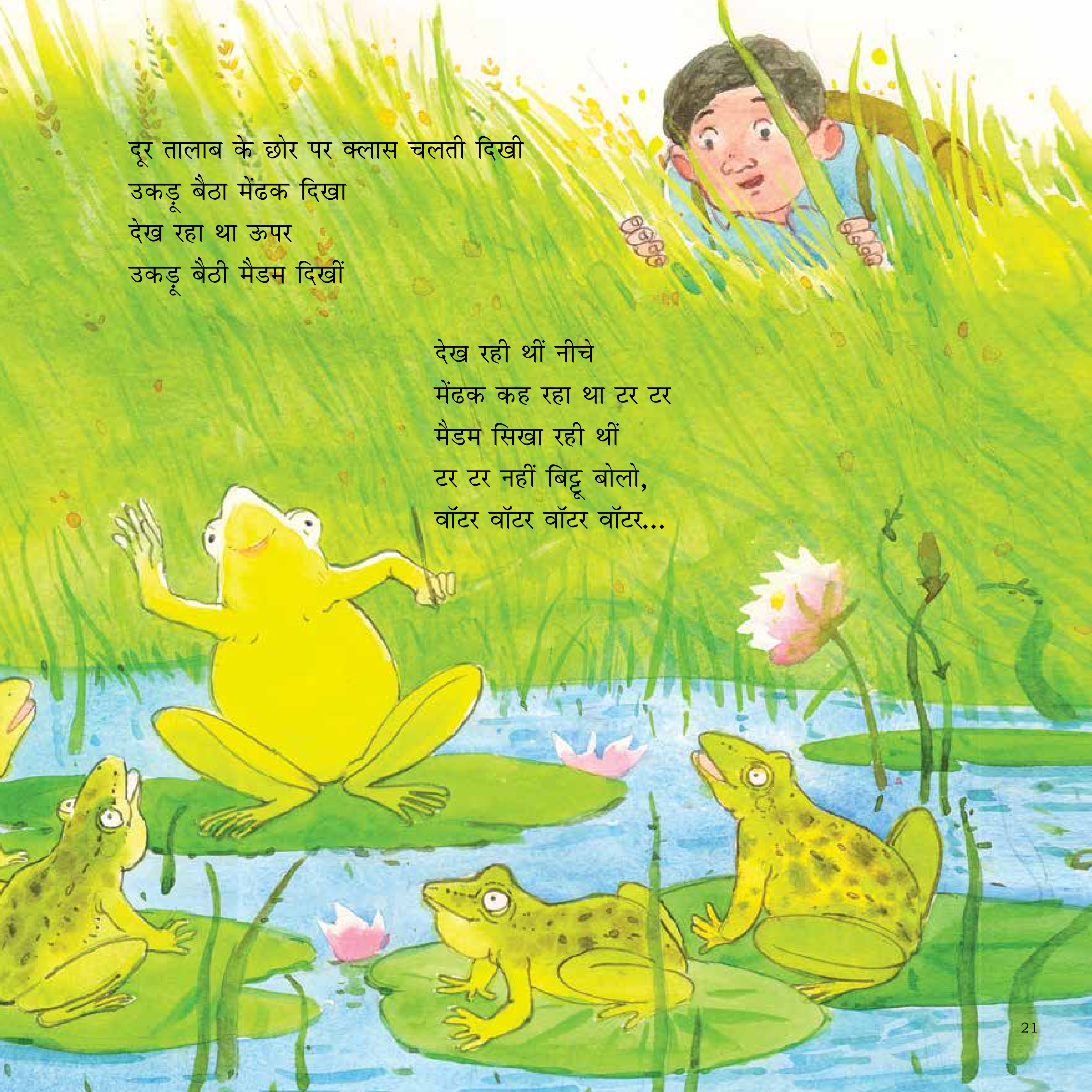

दूर तालाब के छोर पर क्लास चलती दिखी
उकड़ू बैठा मेंढक दिखा
देख रहा था ऊपर
उकड़ू बैठी मैडम दिखीं

देख रही थीं नीचे
मेंढक कह रहा था टर टर
मैडम सिखा रही थीं
टर टर नहीं बिट्टू बोलो,
वॉटर वॉटर वॉटर वॉटर...

नींद

अनिक जैन, चौथी, डीपीएस लुधियाना
चित्र: प्रियंकर गुप्ता

नींद बहुत ही ज़ालिम चीज़ है। कभी तो आती ही नहीं और कभी आती है तो बहुत ज़्यादा आती है। जब सुबह स्कूल जाना हो तो नींद खुलती ही नहीं। और जब रात को सोना हो तो नींद आती ही नहीं।

जब खेलता हूँ तो नींद भाग जाती है। और जब पढ़ता हूँ तो भागकर आ जाती है।

पर आजकल तो अलग मिज़ाज है नींद का। माँ ने जब से मुझे कमरे में अकेले सुलाना शुरू किया है, तब से दुनिया भर के भूत मेरे पास मँडराने लगे हैं। आँख बन्द करता हूँ तो कुछ दिखाई देता है। और जब आँख खोलता हूँ तो कुछ सुनाई देता है। मानो, कोई दरवाज़ा खोल रहा हो।

बार-बार पेशाब आ जाती है, पर नींद नहीं आती। क्या करूँ भाइयो, नींद को कैसे बुलाऊँ!!

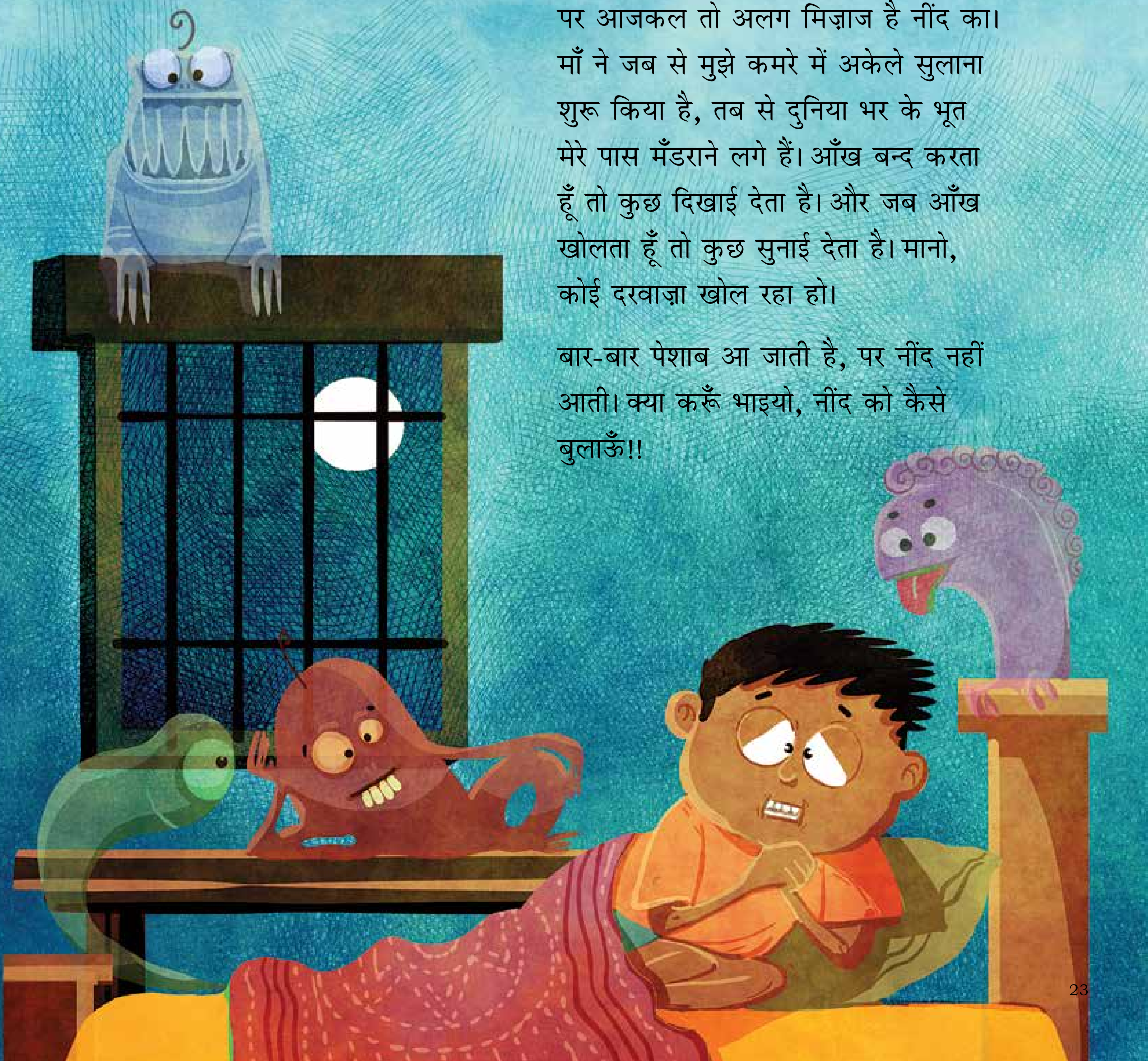

खरहे का अन्तिम संस्कार

रोहित शुक्ला | चित्र: विश्वज्योति घोष

मैं और संजय कैसे भी उस खरहे को पकड़ लेना चाहते थे। परन्तु वह लेंटाना झाड़ियों और कँटीली नागफनी के बीच दुबका हुआ था। हम जैसे ही उसे पकड़ने हाथ बढ़ाते, वह साँप की तरह फुँफकारता। मैंने सुन रखा था कि खरहा किसी की आँख पर फुँफकार दे तो वह अन्धा हो जाता है। इसलिए हम दोनों में से कोई भी उसे पकड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। हम उसे झाड़ियों से बाहर निकालने के लिए उसमें लकड़ी डाल रहे थे। अन्ततः खरहा निढाल होकर गिर पड़ा। किसी तरह मैंने उसे बाहर निकाला तो देखा, वह मर चुका था। हम दोनों अपने किए पर पछता रहे थे। खरहे के शव को गोद में रखकर दोनों बहुत रोये। हमने तय किया कि इसका अन्तिम संस्कार विधि-विधान से करेंगे। यही हमारा प्रायश्चित होगा। मैंने खरहे का शव ज़मीन पर रखकर उसे रुमाल से ढँक दिया।

बबूल की सूखी लकड़ी से हम गड्ढा खोदने लगे। जब गड्ढा खुद गया तो रुमाल उठाया। खरहे का शव वहाँ नहीं था। हम हैरान खड़े थे। और खरहा कुलांचे भरता हुआ झाड़ियों में गायब हो गया था।

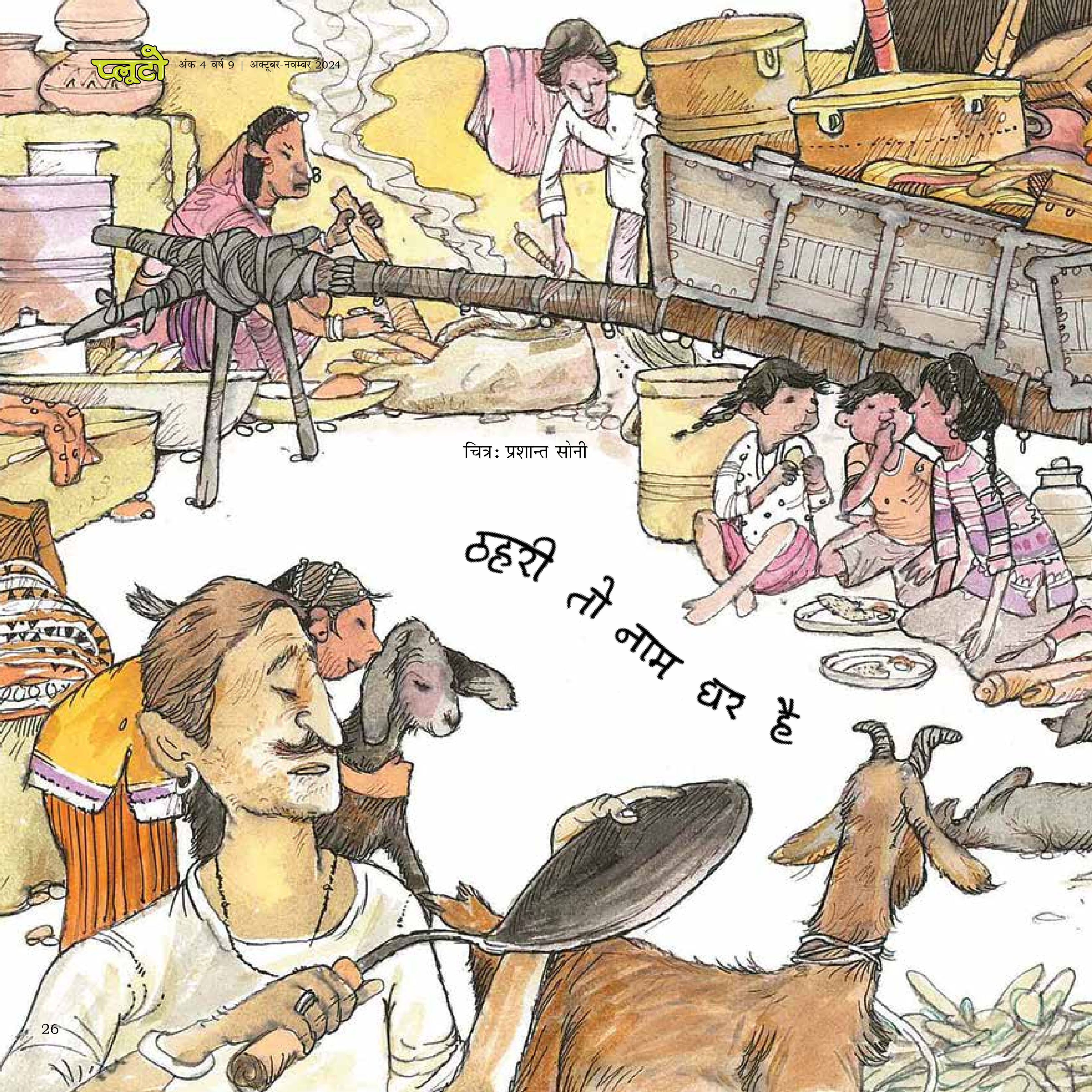

ठहरी तो नाम घर है

चित्र: प्रशान्त सोनी

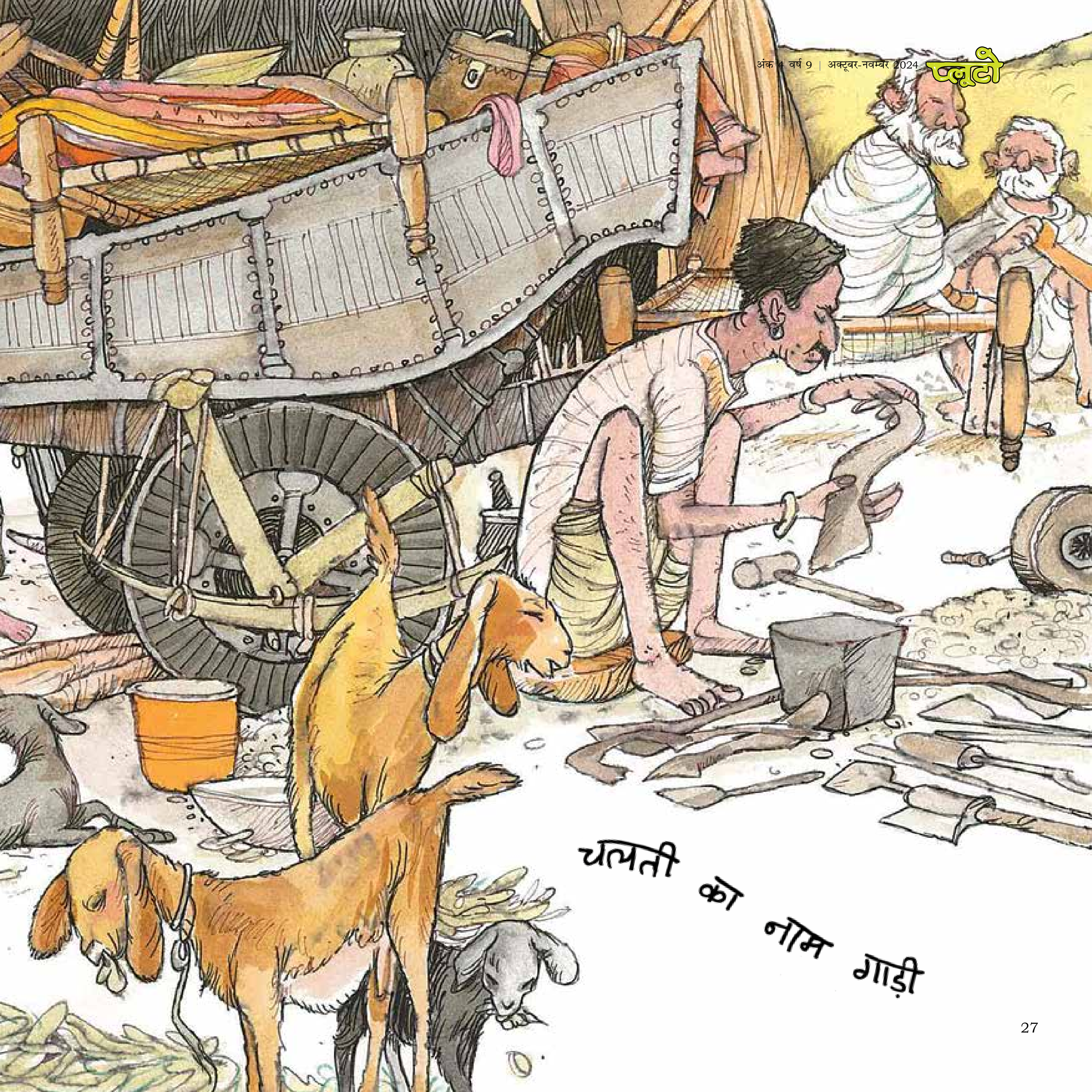

चलती का नाम गाड़ी

शेर और लोमड़ी

लेव तोलस्तोय
चित्र: भार्गव कुलकर्णी
अनुवाद: प्रगति टिपनिस

बूढ़ा शेर शिकार नहीं कर पाता था। पेट भरने के लिए उसे जुगत लगानी पड़ी। वह एक गुफा में बीमार होने का बहाना करके लेट गया। जानवर उसका हालचाल पूछने आने लगे। जो भी गुफा में जाता शेर उसे खा जाता था।

लोमड़ी उसकी चाल समझ गयी। उसने गुफा के बाहर से ही शेर का हालचाल पूछा। शेर बोला कि उसका हाल बुरा है और पूछा कि वह भीतर क्यों नहीं आती?

लोमड़ी बोली, "क्योंकि मुझे अन्दर जाते हुए पैरों के बहुत सारे निशान दिख रहे हैं लेकिन बाहर आता एक भी निशान नहीं दिख रहा।"

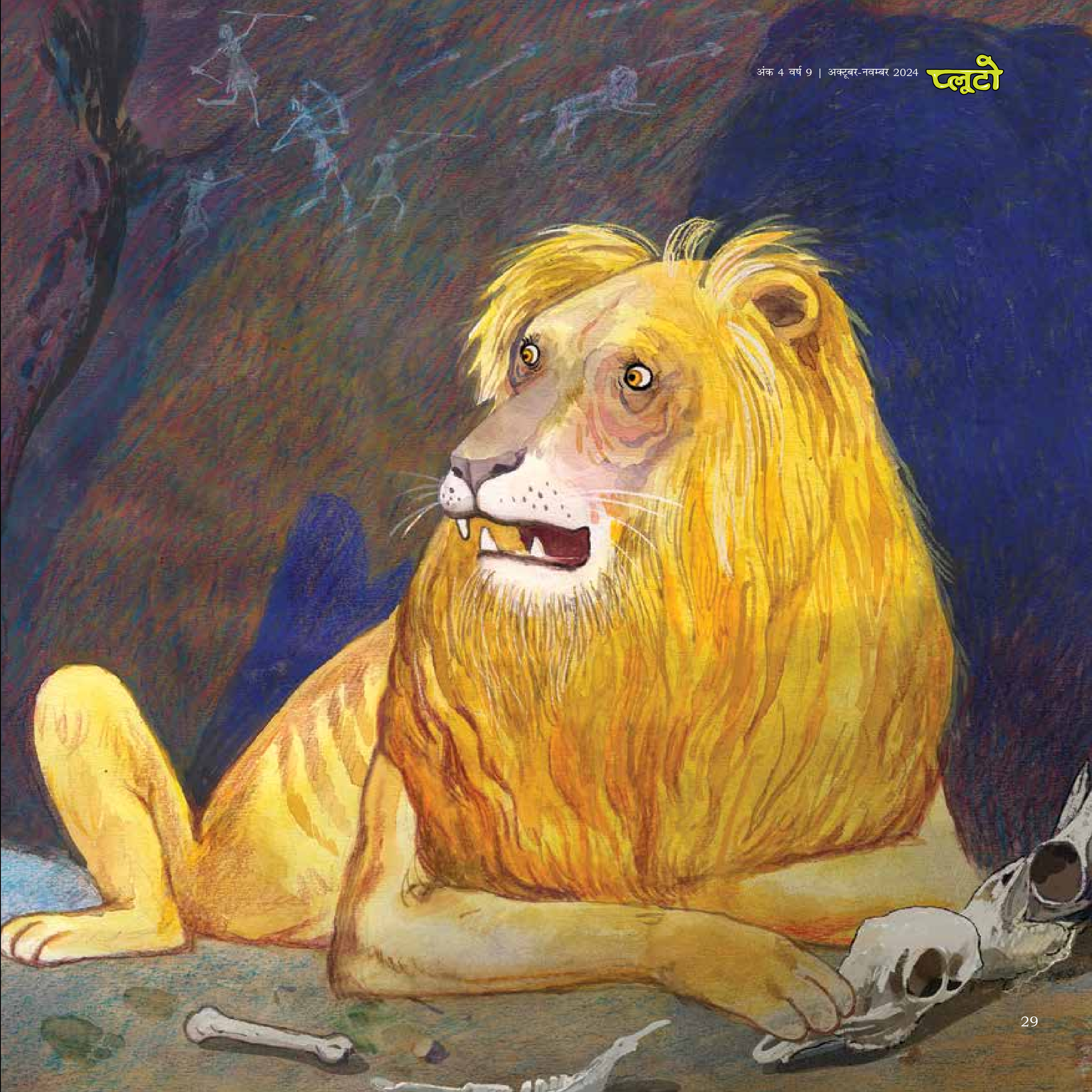

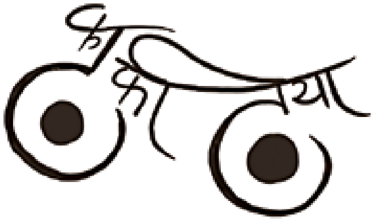

प्लूटो

इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादक
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

उपसम्पादक
चन्दन यादव
तज़ीन अली

वितरण
अनीता शर्मा
सुनील भाटी

डिज़ाइन
आस्क - आर्ट डिज़ाइन कलेक्टिव

आवरण चित्र
एलन शॉ

सहसम्पादक
दिव्या सिंह

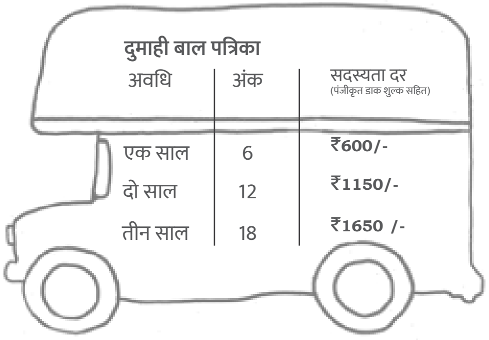

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹600/-
दो साल	12	₹1150/-
तीन साल	18	₹1650 /-

एक प्रति - ₹75 (डाक खर्च अतिरिक्त)

भुगतान विवरण:
बैंक ड्राफ्ट/चैक - इकतारा ट्रस्ट Ektara Trust
नई दिल्ली के नाम देय ।

ऑनलाइन ट्रांसफर
एच.डी.एफ.सी. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 50100688089124, IFSC: HDFC0000134 में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektarashop.in

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा– तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
2, मालवीय नगर, भोपाल 462003

फोन 0755-4939472, 9109915118,
9630097118

ई-मेल pluto@ektaraindia.in

वेबसाइट www.ektaraindia.in

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा इकतारा ट्रस्ट - तक्षशिला एजुकेशन सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नम्बर 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित। सम्पादक - सुशील शुक्ल

एक सपना

चित्र व कविता: कविता सिंह काले

माँ मैंने देखा एक सपना,
चलता-फिरता घर हो अपना।
घर-गाड़ी, या गाड़ी-घर हो,
कभी गाँव हो, कभी शहर हो।

आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

ST 0000399